aii ea

सेन्ट्रल जोन इंश्योरेंस एम्पलाईज एसोसियेशन

(ए.आई.आई.ई.ए. से संबद्ध)

33, प्रभांजलि, आर.डी.ए. कालोनी, टिकरापारा, रायपुर (छ.ग.)

cz iea

अध्यक्ष : का. एन. चक्रवर्ती

महासचिव : का. डी. आर. महापात्र

परिपत्र क्र. : 6/2017

दिनांक : 01/05/2017

मध्य क्षेत्र के समस्त साथियों के नाम

प्रिय साथियों ,

विषय : मई दिवस का महत्व

मई दिवस 2017 के मौके पर हम हमारे समस्त साथियों व विश्व तथा देश के मेहनतकशों को क्रांतिकारी शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। आज के दौर में मई दिवस की प्रासंगिकता और बढ़ी है, इसलिए इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर चर्चा आवश्यक है। वर्ष 2017 का मई दिवस पूरी दुनिया के मजदूर वर्ग ऐसे मौके पर मना रहे हैं जब, विश्व का मजदूर वर्ग अक्टूबर क्रांति का शताब्दी वर्ष मना रहा है। आठ घंटे के कार्य दिवस को हासिल करने की उपलब्धिमय संघर्ष और मजदूर वर्ग के पूंजीवादी निर्मम शोषण से मुक्त कर शोषण विहीन समाज के निर्माण के मजदूर वर्ग की अंतिम मुक्ति के संघर्ष के बीच गहरा संबंध रहा है। 8 घंटे के कार्य दिवस के प्रारंभिक संघर्ष के दिनों से ही विश्व के मजदूर वर्ग का शोषण के मूल पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध संघर्षों की प्रतिबद्धता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के चलते भी महान अक्टूबर क्रांति के साथ इसके अंर्तसंबंध को रेखांकित करता है।

मार्क्स व एंगेलस की विचारधारा हे मार्केट स्क्वेयर के शहीदों व उनके संघर्षों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहे, जिसने अंतत: महान मई दिवस को दुनिया के मजदूरों के संघर्ष के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में प्रतिस्थापित किया। यही कारण है कि रूसी क्रांति में भी मई दिवस के संघर्ष ने अपनी गहरी भूमिका अदा की। रूस में व्यवस्थित ढंग से पहली बार सेंट पीट्सबर्ग के बाहरी छोर में सोशल डेमोक्रेटिक लेबर यूनियन के नेतृत्व में 1890 में यह मनाई गई। धीरे-धीरे यह रूस के कई शहरों में भी मनानी शुरू हुई। 1986 में मास्को में मई दिवस मनाई गई। मई दिवस का संघर्ष एक राजनैतिक संघर्ष के मंच में तब्दील हो गया।

पूंजीवादी इतिहास में छोटा कार्य दिवस की मांग वर्ग संघर्ष के प्रारंभिक संघर्षों का अध्याय रहा। वास्तव में यह पूंजीवादी वर्ग और मजदूर वर्ग के मध्य वर्ग संघर्ष का सबसे ज्वलंत मुद्दा था। यह संघर्ष ही था जो विश्व भर में आगे चलकर ट्रेड यूनियन आंदोलन की बुनियाद बना। मजदूरों के लिए लंबी अवधि का कार्य दिवस, कुछ मामलों में तो 16 घंटे से भी अधिक का कार्य दिवस से मजदूरों के स्वास्थ्य और सामान्य हालत पर गहरा दुष्प्रभाव पड़ रहा था, यहां तक कि महिलाओं, बच्चों तक को अमानवीय हालात में लंबे अवधि तक कार्य कराया जाता था, जिससे 20 या 30 साल की उम्र में ही उनकी मौतें तक हो जाती थी। शुरूआती दिनों में पूरे इंग्लैंड में चार्टिस्ट आंदोलन के हड़तालों के उभार ने इस सवाल पर राजनैतिक रूप से ध्यान आकृष्ट कराया। इस सतत संघर्ष के चलते कुछ धंधों/कार्यों में दस व 9 घंटे के कार्य दिवस को स्वीकृत किया गया। जनदबाव के चलते बने फैक्ट्री कानून से कुछ हद तक महिलाओं व बच्चों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ।

हालांकि जार्टिस्ट नेता के गुजर जाने के बाद उनकी विचारधारा के प्रभाव में आस्ट्रेलियन मजदूर वर्ग ने अपने 1840 के स्वस्फूर्त संघर्ष और मेलबोर्न व सिडनी के पत्थर मजदूर के 1856 के आंदोलनों के चलते कुछ धंधों/कार्यों में 8 घंटे कार्य दिवस हासिल कर लिया। धीरे-धीरे 8 घंटे के कार्य दिवस की मांग का संघर्ष विश्व भर में फैलने लगा। हालांकि , वास्तव में 8 घंटे का कार्यदिवस का संघर्ष का वैश्विक स्वरूप अमरीका के शिकागो के हे मार्केट स्क्वेयर के संघर्ष के प्रतीक के साथ ही व्यापक रूप से स्थापित हुआ।

चार्टिस्ट आंदोलन के बाद, काम के घंटे घटाने को लेकर सबसे तीखा संघर्ष अटलांटिक व उत्तरी अमरीका में हुआ।

हालांकि काम के घंटे को घटाने की मांग पर श्रम संगठनों द्वारा 1827 के शुरुआत में हड़तालों के बावजूद ठोस रूप में पहली बार विलियम एच. स्यालवीश के नेतृत्व में नेशनल लेबर यूनियन की स्थापना सम्मेलन में 8 घंटे के कार्य दिवस की मांग की बात कही गई। इस कन्वेंशन ने घोषणा की कि छोटा कार्य दिवस आवश्यक है। इस देश की मजदूरों को पूंजीवादी गुलामी से मुक्त करो। इस आंदोलन के हिस्से के रूप में समूचे अमरीका में आठ घंटे लीग का गठन किया गया। अंततः 1868 में अमरीकी कांग्रेस ने सार्वजनिक मांगों में 8 घंटे के कार्य दिवस का कानून पारित किया। यद्यपि नेशनल लेबर यूनियन के तहत अमरीका में चल रहा आंदोलन मृतप्राय हो गया लेकिन सभी हिस्से के श्रमिकों के लिए सार्वभौम 8 घंटे का कार्यदिवस की मांग फिर से अग्रिम पंक्ति में उभरकर सामने आया, जब नवगठित अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर ने अक्टूबर 1884 में एक प्रस्ताव पारित कर कहा कि 1 मई 1886 से आठ घंटा का कार्यदिवस श्रमिकों का वैधानिक दिवस हो जाये।

अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर के अलावा नाईट्स ऑफ लेबर सहित श्रमिकों के अन्य समूह के भारी समर्थन से 1884 से 1888 के दौरान श्रमिक आंदोलन में भारी उत्साह का संचार हुआ। एक अनुमान के अनुसार 1 मई की 8 घंटे के कार्यदिवस की मांग पर हुई हड़ताल में 5,00,000 श्रमिक प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी किये थे। यह आंदोलन ही हे मार्केट की हिंसात्मक घटना में परिवर्तित हुआ। इस कार्यक्रम की शुरुआत 1 मई 1886 की हड़ताल से हुई। यह हड़ताल सर्वाधिक उत्साहपूर्ण ढंग से शिकागो में हुई थी जिसमें दसियों हजार मजदूर 8 घंटे के कार्यदिवस की मांग करते हुए सक्रियता से भागीदारी किये थे।

3 मई को मेक्रेामिक रिपेयर वर्कर्स के हड़ताली श्रमिकों की एक सभा में पुलिस ने नृशंस हमला किया, जिसमें 6 श्रमिक मारे गए। 4 मई का दिन शिकागो में बारिश का दिन था। यह मीटिंग अपने अंत की ओर थी। एक दिन पूर्व पुलिस बर्बरता के खिलाफ आयोजित इस प्रदर्शन के दिन की शुरुआत में 3000 मजदूर उपस्थित थे, जिनमें से सभा के अंतिम समय में लगभग 200 मजदूर ही बचे थे। अगस्त स्पाईस का पुलिस बर्बरता का विरोध करते हुए जोशीला भाषण समाप्ति की ओर था, पुलिस की टुकड़ी मौजूद बचे हुए लोगों को जोशीले भाषण से अलग करने आगे बढ़ रही थी, ठीक उसी समय अचानक भीड़ के बीच न जाने कहां से एक बम फटा। इसके बाद पुलिस गोलीचालन व पत्थरबाजी शुरु हो गई। हे मार्केट की इस घटना, जिसके बाद में इसके चलते शिकागो के चार जुझारू ट्रेड यूनियन योद्धा को फांसी पर चढ़ा दिया गया, जिसमें अल्बर्ट पार्सन्स, अगस्त स्पाईस, एडोल्फ फिशर, जार्ज एंगेल जैसे शहीद शामिल थे। एक साथी लुईस लिंग ने आत्महत्या कर ली। शिकागो के मई दिवस के इन शहीदों ने विश्व के मजदूर वर्ग के वर्ग संघर्ष के इतिहास का ऐतिहासिक हिस्सा गढ़ा। यह बात किसी से छिपी नहीं है कि इस अभूतपूर्व संघर्ष और मजदूर आंदोलन से उभरे ज्वार से भयभीत मालिकान के भाड़े के गुंडों की कायराना हरकत का दोष मजदूरों के संघर्ष पर मढ़कर इन साथियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। अगस्त स्पाईस ने अपनी शहादत के पूर्व ये बातें कहीं थी –

"A Day will come when our silence will be more powerful then the voices you are throting today."

1 मई को पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में, इन महान क्रांतिकारियों को विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए विश्व स्तर पर मनने वाले दुनिया के मेहनतकशों के पर्व, मई दिवस पर पूंजीवादी निर्मम शोषण और गुलामी से मुक्ति हासिल कर, शोषणविहीन एक मानव समाज के निर्माण के लिए उठती गूंजों में यही प्रतिध्वनित हो रहा है। ''मई दिवस अमर रहे , शिकागो के अमर शहीदो अमर रहो''

मई दिवस पर पुनः अनेकानेक शुभकामनाएं। अभिनंदन...

दुनिया के मजदूरों एक हो ।

मई दिवस अमर रहे ।।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ...

आपका साथी

(डी.आर. महापात्र)

महासचिव